# एक अकादमी के लिए रपट

फ्रैन्ज़ काफ्का

**अकादमी के माननीय भद्रपुरुषो,**

आप लोगों ने मुझे गोरिल्ला-वानर के रूप में मेरे पिछले जीवन के बारे में अकादमी को रपट पेश करने के लिए कहकर मेरा सम्मान किया है।

बदकिस्मती से मैं आपकी प्रार्थना को उस रूप में पूरा नहीं कर सकता जिस तरह से आपने उसे व्यक्त किया है। मुझे वानरपन छोड़े लगभग पांच वर्ष बीत चुके हैं। कैलेण्डर के हिसाब से देखें तो शायद यह कोई लम्बा अर्सा नहीं है। परन्तु मेरे लिए यह अनन्त समय था जिसमें से मुझे धीमी लेकिन अनवरत चाल से गुज़रना पड़ा। इस लम्बे रास्ते के कुछ हिस्सों में मेरे साथ कुछ बहुत बढ़िया लोग थे। मुझे कुछ अच्छी सलाह मिली, मेरा गुणगान हुआ, मेरे लिए वृन्द-संगीत बजाया गया। परन्तु मूलतः मैं अकेला था, क्योंकि तस्वीर में बने रहते हुए भी वे सब एक सीमा से दूर ही खड़े रहे।

मेरे लिए यह उपलब्धि असम्भव होती यदि मैं जानबूझकर अपने उद्‌गम और

पार्टी का मुखिया और मैं तब से बढ़िया लाल शराब की पता नहीं कितनी बोतलें मिलकर खाली कर चुके हैं - एक शाम घात लगाकर किनारे पर इन्तज़ार कर रही थी। मैं और अन्य वानरों का टोला पानी पीने की अपनी जगह की ओर दौड़ता हुआ आया। गोलियां चलने लगीं। सिर्फ मुझे ही गोली लगी। वे मुझे दो बार गोली मारने में सफल हुए।

एक बार गाल में। यह कोई गम्भीर चोट नहीं थी, पर वह एक बड़ा, नंगा, लाल दाग छोड़ गई जिससे मुझे 'लाल पीटर' का घृणित, बिल्कुल अनुचित नाम मिला - मैं सही कह रहा हूं; यह किसी वानर को ही सूझा होगा - जैसे कि मेरे और पीटर के बीच, जो अभी-अभी मरा था और एक प्रशिक्षित वानर के तौर पर काफी प्रसिद्ध था, सिर्फ यही एक फर्क था कि मेरी गाल पर लाल निशान था। पर यह बात तो ऐसे ही बता रहा हूं।

दूसरी गोली मुझे कूल्हे के नीचे लगी। यह एक गहरी चोट थी और यह इस तथ्य के लिए दोषी है कि आज भी मैं ज़रा लंगड़ाकर चलता हूं। वे हज़ारों बड़बोले लेखक जो मेरे बारे में अखबारों में हांकते रहते हैं, उनके एक लेख में हाल ही में मैंने पढ़ा : कि मेरा वानरपन अभी पूरी तरह दबा नहीं है। इसका सबूत यह है कि जब लोग मुझे मिलने आते हैं, तो मैं खुशी-खुशी अपनी पैंट उतारकर उन्हें वह जगह दिखाता हूं जहां पर मुझे गोली लगी थी। इस व्यक्ति के हाथ की हर वह ऊंगली उड़ा दी जानी चाहिए जिससे वह लिखता है। मैं अपनी पैंट जिस किसी के भी सामने उतारना चाहूं उतार सकता हूं; हां, मैं ऐसा कर सकता हूं। वहां किसी को और कुछ नहीं मिलेगा : केवल चिकनी-चुपड़ी खाल और एक पुराने घाव का निशान; घाव जो - और आइए हम एक खास उद्देश्य के लिए एक खास शब्द का उपयोग करें, लेकिन उम्मीद करें कि इसे गलत ढंग से नहीं लिया जाएगा - एक बदमस्त गोली छोड़ गयी। हर चीज़ खुली हुई और सबके सामने है; कुछ भी छुपाने की ज़रूरत नहीं। जब सत्य का सवाल आता है, हर मनस्वी व्यक्ति परम शिष्टाचार को त्याग देता है। लेकिन मुलाकातियों के आने पर यदि यह लेखक खुद अपनी पैंट उतार दे तो यह एक दूसरी ही बात होगी, और मैं इसे उसके विवेक की निशानी मानने को तैयार हूं कि वह ऐसा नहीं करता। लेकिन उसे अपनी कोमल भावनाओं को मेरी पीठ पर लाद देने से गुरेज़ करना चाहिए।

गोली लगने के बाद - और यहां मेरी अपनी स्मृतियां धीरे-धीरे जगने लगती हैं - हेजनबेक्क कम्पनी के स्टीमर के डेक् पर एक पिंजरे में मेरी आंख खुली। यह चार दीवारों और सलाखों वाला कोई आम पिंजरा नहीं था। इसकी बजाय इसकी केवल तीन दीवारें थीं जो एक क्रेट से जुड़ी हुई थीं; चौथी दीवार क्रेट से ही बनती थी। पिंजरा इतना छोटा था कि उसमें खड़ा होना मुश्किल था, और इतना तंग कि उसमें बैठना भी सम्भव नहीं था। इसलिए मैं घुटने मोड़कर, उकडूं होकर बैठा हुआ था - और लगातार कांप रहा था। और क्योंकि शुरू में शायद किसी को भी देखने की मेरी इच्छा नहीं थीं - केवल अन्धेरे में रहने की इच्छा थी - मैं क्रेट की ओर मुंह करके बैठा था, और पीछे से सलाखें मेरे

ढकेलें कि वे आपको लगभग दो टुकड़ों में बांट दें, लेकिन आपको इसका कारण नहीं मिलेगा। मेरे पास बच निकलने का कोई रास्ता नहीं था, फिर भी कोई रास्ता मुझे निकालना था, क्योंकि उसके बिना मैं ज़िन्दा नहीं रह सकता था। यह क्रेट सदा मेरे सामने बनी रहे - नहीं; इस तरह तो अवश्य मेरा विनाश हो जाता। परन्तु एक हेजनबेक्क वानर की जगह क्रेट के आगे है - तो ठीक है, मैंने वानर होना छोड़ दिया। विचारों की एक पारदर्शी, सुन्दर ृंखला, जिसका सपना मुझे पेट के सहारे आया होगा, क्योंकि वानर अपने पेट से ही सोचते हैं।

मुझे इस बात की चिन्ता है कि लोग ठीक-ठीक समझ नहीं पाएंगे कि 'बच निकलने के रास्ते' से मेरा क्या मतलब है। मैं इस वाक्यांश का उपयोग उसके सबसे आम और पूर्ण अर्थ में कर रहा हूं। मैं जानबूझकर मुक्ति नहीं कह रहा। मेरा मतलब मुक्ति के उस भव्य अहसास से नहीं है जो हम अपने चारों ओर महसूस करते हैं। एक गोरिल्ला-वानर के रूप में शायद मैं उसे जानता था, और मैं ऐसे लोगों को मिला हूं जो उसकी कामना करते हैं। जहां तक मेरा सवाल है, मैंने मुक्ति की मांग न तो उस वक्त की थी और न अब करता हूं। वैसे भी, मुक्ति एक ऐसी चीज़ है जिससे आमतौर पर मनुष्य लोग अपने आपको धोखा देते हैं। और जिस तरह मुक्ति सबसे उदात्त भावनाओं में से एक है, उसी तरह उसकी संगत में चलने वाली भ्रान्ति सबसे उदात्त भ्रान्तियों में से है। अक्सर सर्कस में मैंने कलाकारों को, शायद एक जोड़े को, कुछ और करने से पहले, छत के नीचे अपने झूलों पर व्यस्त देखा है। वे अपनी बाहों से लटक रहे होते हैं। झूलते हुए वे अपने आपको ऊपर की ओर फेंकते हैं, बहुत ऊपर, एक-दूसरे को पकड़ते हुए। उनमें से एक अपने दांतों से दूसरे को बालों से पकड़ लेता है। 'यह भी मानव स्वतन्त्रता है,' मैं सोचता हूं, 'गति में नैपुण्य'। ओह, प्रकृति की पवित्रता का परिहास! इस तरह के दृश्य पर वानर दुनिया के अट्टहास से इमारतें तक ढह जाएंगी।

नहीं, मुझे मुक्ति नहीं चाहिए थी। सिर्फ बाहर निकलने का एक रास्ता, दायीं तरफ, बायीं तरफ, इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता था कि किस तरफ। मेरा और कोई अनुरोध नहीं था। और यदि बाहर निकलने

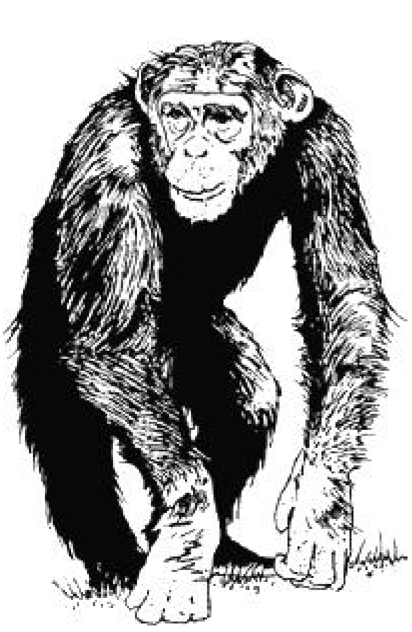

कोशिश नहीं की। आज पीछे मुड़कर देखूं तो लगभग ऐसा लगता है कि जैसे मुझे कुछ अन्दाज़ा था कि ज़िन्दा रहने के लिए मुझे बच निकलने का कोई रास्ता तो तलाशना ही होगा, पर वह रास्ता निकलकर भाग जाने में नहीं था। मुझे याद नहीं कि निकल भागने की कोई सम्भावना भी थी या नहीं, परन्तु मुझे लगता है कि ज़रूर रही होगी। एक गोरिल्ला-वानर के लिए निकल भागने की सम्भावना सदा बनी रहनी चाहिए। अपने दांतों से, जैसे इस वक्त वो हैं, मुझे बादाम वगैरह तक तोड़ने में सावधानी बरतनी पड़ती है। परन्तु यह निश्चित है कि उन दिनों मैं दरवाज़े पर लगे ताले को अन्ततः काट देता। मैंने ऐसा किया नहीं। आखिर, इससे मुझे मिल भी क्या जाता? मैंने अपना सिर बाहर निकाला ही होता कि मैं फिर पकड़ा जाता और उससे भी बुरे किसी पिंजरे में बन्द कर दिया जाता। या फिर मैं बिना दिखे कुछ दूसरे जानवरों तक पहुंच जाता, जैसे सामने वाले विशाल अजगर तक, और उनके आलिंगन में दम तोड़ देता। या फिर मान लें कि मैं छिपते-छिपाते डेक् पर से होता हुआ समुद्र में कूद जाता; मैं उसकी छाती पर कुछ देर थपेड़े खाता और फिर डूब जाता। निराशा से भरे उपाय। मैंने उस समय अपनी समस्या के बारे में इस तरह मनुष्यों की तरह सोच-विचार नहीं किया था, परन्तु अपने माहौल

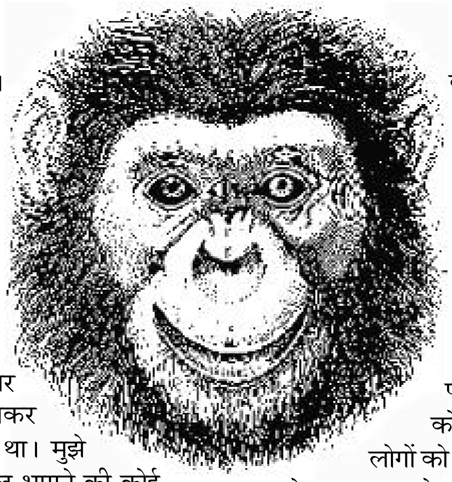

के प्रभाव में मैं इस तरह बर्ताव कर रहा था जैसे कि ये सब सोच-विचार कर ही मैं आगे बढ़ रहा हूं।

मैं अपनी समस्या को सुलझा नहीं पाया, पर मैं चुपचाप चीज़ों को देखता रहा। मैं उन लोगों को इधर-उधर जाते हुए देखता था, हमेशा वही चेहरे, वही हरकतें। वास्तव में अक्सर मुझे लगता था कि वह एक ही व्यक्ति था। मैंने देखा कि वह व्यक्ति या वे व्यक्ति किसी भी तरह के उत्पीड़न से बचे रहते थे। मुझे एक उन्नत लक्ष्य की झलक मिली। किसी ने भी मुझसे यह वायदा नहीं किया था कि यदि मैं उन जैसा बन जाऊं तो सींखचों को खोल दिया जाएगा। इस तरह के वायदे, जिनका निर्वाह करना असम्भव लगता है, कभी नहीं किए जाते। परन्तु यदि हम अपना हिस्सा पूरा कर दें, तो वायदे भी बिल्कुल वहीं प्रकट हो जाएंगें जहां पहले आप उन्हें ढूंढते रहे थे और ढूंढ नहीं पाए थे। अब, उन लोगों में ऐसा कुछ नहीं था जो मुझे विशेष तौर पर प्रलोभित करता। यदि मैं ऐसी स्वतन्त्रता का भक्त होता जिसका ज़िक्र ऊपर हुआ है, तो बच निकलने का जो रास्ता मुझे उनकी मलिन नज़रों में दिखाई दे रहा था उसकी बजाय बेशक मैंने समुद्र को प्राथमिकता दी होती। जो भी हो, इससे पहले कि इस तरह की चीज़ें मुझे सूझतीं, मैं लम्बे समय से उनको

किस्मत थी मेरी। तब भी, जब बोतल मेरी ओर बढ़ायी जाती थी, मैं जैसे-तैसे उसे पकड़ लेता था, और कांपते हाथों से उसे खोलता था। मैंने देखा कि इस सफलता से धीरे-धीरे मुझे नयी ताकत मिली। मैं बोतल को ऊपर की ओर उठाता था। मेरे इस एक्शन को मूल से अलग कर पााना लगभग असम्भव होता था। मैं उसे अपने होठों से लगाता था, और - और उसे नफरत से, हां, नफरत से, बावजूद इसके कि वह खाली होती थी और उसमें बू के अलावा कुछ नहीं होता था, फर्श पर पटक देता था। इससे मेरे शिक्षक को, और उससे भी ज़्यादा मुझे, बहुत दुख होता था। न तो वह और न ही मैं इस बात से तुष्ट होते थे कि बोतल फेंकने के बाद मैं अपने पेट पर खूब अच्छी तरह से हाथ फेरना और दांत निपोरना भूलता नहीं था।

आमतौर पर यह सबक यही दिशा लेता था। और मैं अपने शिक्षक को इस बात का श्रेय देता हूं कि वह मुझसे नाराज़ नहीं होता था। यह सही है कि कभी-कभार वह अपनी जलती हुई पाइप मेरे बालों पर रख देता था और तब तक रखे रहता था जब तक कि वे सुलगने न लगें। वह ऐसी जगह चुनता था जहां मेरे लिए अपना हाथ पहुंचाना मुश्किल होता था। पर वह सदा, उसे अपने बड़े और उदार हाथ से बुझा देता था। वह मुझसे नाराज़ नहीं होता था, परन्तु वह देख सकता था कि वानरपन के खिलाफ इस लड़ाई में हम दोनों एक ही तरफ थे और कि मेरा काम कहीं ज़्यादा मुश्किल था।

इसलिए वह कमाल की विजय थी, उसके लिए और मेरे लिए भी, जब एक शाम दर्शकों के एक बड़े समूह के सामने - शायद कोई पार्टी चल रही थी, ग्रामोफोन बज रहा था, एक अधिकारी लोगों के बीच इधर-उधर टहल रहा था - जब, उस शाम, उस वक्त जब कोई भी मुझे देख नहीं रहा था, मैंने व्हिस्की की एक बोतल उठायी, जो अनगहली में मेरे पिंजरे के आगे छूट गई थी, और अब जबकि बढ़ती संख्या में वहां इकत्रित लोग मेरी ओर देख रहे थे, मैंने एक सुनिश्चित ढंग से उसे खोला, अपने होठों पर लगाया, और, बिना झिझक के या बिना मुंह बनाए, किसी पेशेवर के आत्म-भरोसे से, आंखों को इधर-उधर घुमाते हुए, गले को गरगराते हुए, उसे एकदम खाली कर दिया। मैंने बोतल को फेंक दिया, इस बार हताशा में नहीं बल्कि सचेत कौशल के साथ। मैं मानता हूं कि मैं अपने पेट पर हाथ फेरना भूल गया। परन्तु क्योंकि मैं अपने आपको रोक नहीं पाया, क्योंकि मुझमें ऐसा करने की उत्कंठा थी, क्योंकि मेरा दिमाग घूम रहा था, मैं एक क्षण के लिए तीखे स्वर में चिल्ला उठा, 'हेलो!' मैं मनुष्यों की आवाज़ में फूट पड़ा। इस चीख के साथ मैं एक छलांग में मनुष्यों के समाज में प्रवेश कर गया। और इसकी प्रतिध्वनि - 'सुनो, उसने कुछ कहा है!' - पसीने से सनी मेरी देह पर दुलार की तरह फैल गई।

मैं दोहरा रहा हूं: मुझे मनुष्यों की नकल करने का प्रलोभन नहीं था। मुझे ऐसा करना पड़ा क्योंकि मैं बाहर निकलने के लिए एक रास्ते की तलाश में था। और कोई भी कारण नहीं था। यह विजय भी एक छोटी-सी उपलब्धि थी। इसके एकदम बाद मेरी आवाज़ फिर वापस चली गयी;

मेरा प्रशिक्षण छोड़ना पड़ा और एक दिमागी अस्पताल में भर्ती होना पड़ा। सौभाग्य से, उसे जल्दी ही छोड़ दिया गया।

परन्तु मैंने कई अध्यापकों को इस्तेमाल किया और उनमें से कइयों को तो एक ही साथ। जब मेरा अपनी योग्यताओं में भरोसा बढ़ गया - उस वक्त जब लोग मेरे विकास पर नज़र गड़ाए हुए थे और मेरा भविष्य उज्जवल लगने लगा था - मैं खुद प्रशिक्षकों को भर्ती करने लगा। मैं उन्हें एक-के-बाद-एक पांच कमरों में बिठा देता, और निरन्तर एक कमरे से दूसरे में छलांग लगाते हुए उन सबसे एक ही साथ सीखता रहता।

क्या विकास किया मैंने ! ज्ञान की किरणें जागृत मस्तिष्क को चहुं ओर से आच्छादित करती हुई ! मैं इससे इन्कार नहीं करूंगा : यह परम सुख था। परन्तु मैं एक और चीज़ स्वीकार करूंगा : मैंने इसे कोई बड़ी बात नहीं माना, उस वक्त भी नहीं, और आज तो मैं इसे और भी कम आंकता हूं। मैंने उस तरह के प्रयासों के बल पर, जैसे प्रयास पृथ्वी पर अभी तक नहीं देखे गये, यूरोप के औसत नागरिक के बराबर शिक्षा प्राप्त कर ली। अपने आप में शायद यह कोई खास बात नहीं, तब भी इसका कुछ महत्व तो है ही। आखिर उसी ने तो मुझे पिंजरे से बाहर निकाला और बाहर निकलने का यह खास रास्ता मुझे प्रदान किया, यह मानवीय रास्ता। बच निकलने को चिन्हित करते हुए एक उत्तम अभिव्यक्ति है : झाड़-झंखाड़ में गायब हो जाओ। मैंने यही किया। मैं झाड़-झंखाड़ में गायब हो गया। मेरे पास और कोई विकल्प नहीं था, यह मानते हुए कि मुक्ति कोई विकल्प नहीं था।

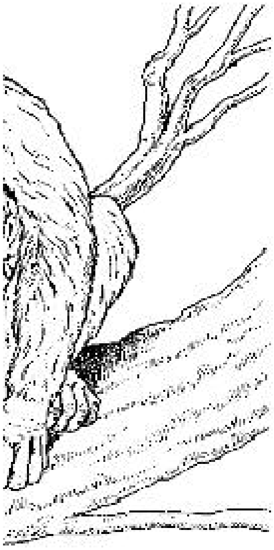

यदि मैं अपनी प्रगति को पीछे मुड़कर देखूं, और जहां पर वह अब तक मुझे ले आयी है, न तो मैं शिकायत करता हूं और न ही मैं संतुष्ट हूं। पैंट की जेबों में हाथ डाले, मेज़ पर शराब की बोतल रखे हुए, रॉकिंग-चेयर पर आधा-लेटे, आधा-बैठे हुए मैं खिड़की से बाहर देखता हूं। यदि लोग मुझे मिलने आते हैं, मैं उचित ढंग से उनकी आवभगत करता हूं। मेरा मैनेजर बाहर वाले कमरे में बैठता है। मेरे घण्टी बजाने पर वह अन्दर आता है और मेरी बात सुनता है। लगभग हर शाम प्रदर्शन होता है, और जो सफलता मुझे